लोकविद्या भाईचारा विद्यालय पुस्तकमाला–1

टेंगरा का पैंतरा

विद्या आश्रम, सारनाथ
वाराणसी

लोकविद्या भाईचारा विद्यालय पुस्तकमाला–1

पुस्तक का नाम : टेंगरा का पैंतरा

सितम्बर 2016

सहयोग राशि : रुपये 25 मात्र

कहानी सुनाने वाले : विद्या आश्रम, सारनाथ की सदस्य सरिता गोंड़ और उसका बेटा शुभम गोंड़
लिपिबद्धकर्ता : विद्या आश्रम के सदस्य

चित्रांकन : चित्रा सहस्रबुद्धे

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : दीनानाथ चौबे

प्रकाशक : विद्या आश्रम, सा. 10/82 ए, अशोक मार्ग, सारनाथ, वाराणसी–221007

सम्पर्क : चित्रा सहस्रबुद्धे, समन्वयक, विद्या आश्रम
सा 10/82 ए, अशोक मार्ग, सारनाथ, वाराणसी–221007
मोबाइल : 9838944822, ई–मेल : vidyaashram@gmail.com

मुद्रण : सत्तनाम प्रिंटर्स, नईबस्ती, पाण्डेयपुर, वाराणसी–221007

टेंगरा का पैंतरा

(टेंगरा यानि नन्ही मछली)

विद्या आश्रम, सारनाथ
वाराणसी

एक किसान रहल। उ रोज खेत पर काम करे जात रहल।
खेती करके उ आपन परिवार चलावत रहल।
परिवार के नाम पर बस दू जने रहलन, उ अउर ओकर मेहरारू।
उनके एक्को बच्चा ना रहलन।

एक दिन किसान क मेहरारू कहलेस–
''आज हमार मछरी खाये क मन करत हौ।''
किसान कहलेस– ''मन त हमरो बड़ा दिन से करत बा।
दा झोला, अउर पइसा दा, हम आज ले ही आई।''

किसान बाजार गयल।
उहाँ एक दुकान से मोल–भाव करके मछरी खरीदलेस।
घर आके अपने मेहरारू से कहलेस– ''ला, तू एके धोवा बनावा।
हम जात हईं खेते।''
किसान खेते चल गयल।

किसान क मेहरारू मछरी बनवनीं अउर किसान क खाये क पोटली बनवनीं।
फिर माथे पर हाथ रखके कहलिन– ''अगर हमरो एगो बाल–बच्चा रहतन त कम–से–कम अपने बाप के खाना त लइके जइतन''
एतना में गगरी के पाछे से आवाज आयल– ''माई–माई दा खनवा, हम लेके जाई''

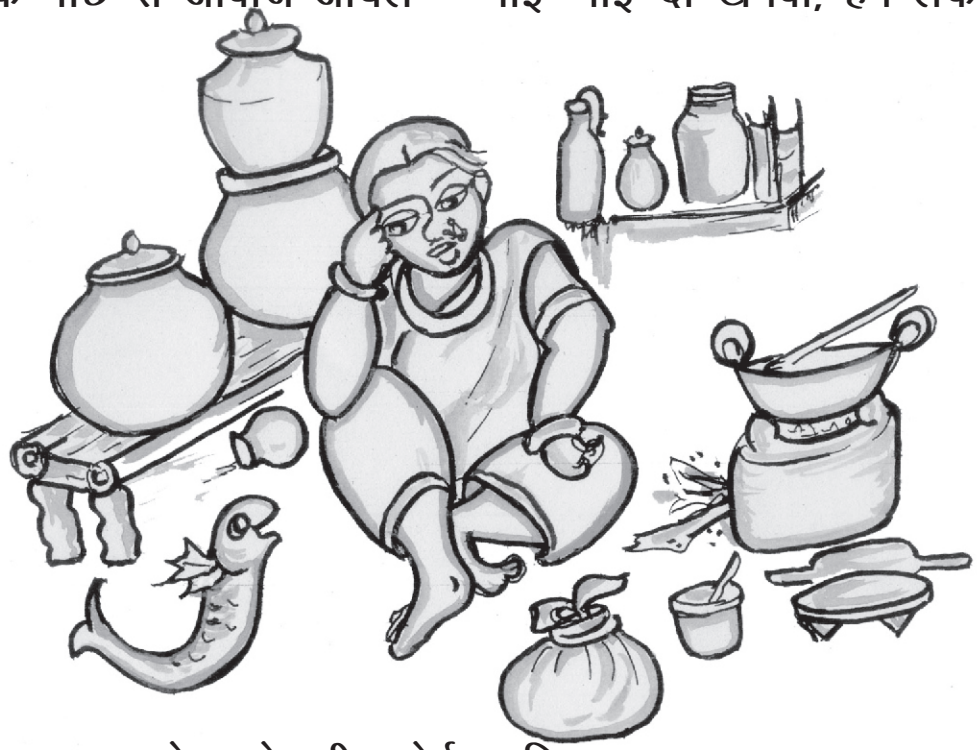

किसान क मेहरारू एहर–ओहर देखनी, कोई न दिखायल।
फिर कुछ देरी बाद आवाज आयल– ''माई–माई दा खनवा, हम लेके जाई''
मेहरारू कहलेस ''के हौ, तू सामने आवा''

गगरी के पाछे से एक टेंगरा छटकत–छटकत सामने आयल।
मेहरारू कहलेस– ''तू के हउआ ?''
टैंगरा कहलेस– ''बाऊ जवन मछरिया लियाल रहलन, ओही में हम रहलीं।
अउर छटक के गगरिया के पाछे लुका गयल रहलीं।''
मेहरारू कहलेस– ''अच्छा, तू हउआ ? बाकि,
तू इतना छोटक हउआ त खनवा कइसे लेके जइबा ?''
टेंगरा कहलेस– ''माई तू चिंता मत करा,
बस हई पोटलिया हमरे कँटवा में फँसा दा, हम ले जाइब।''

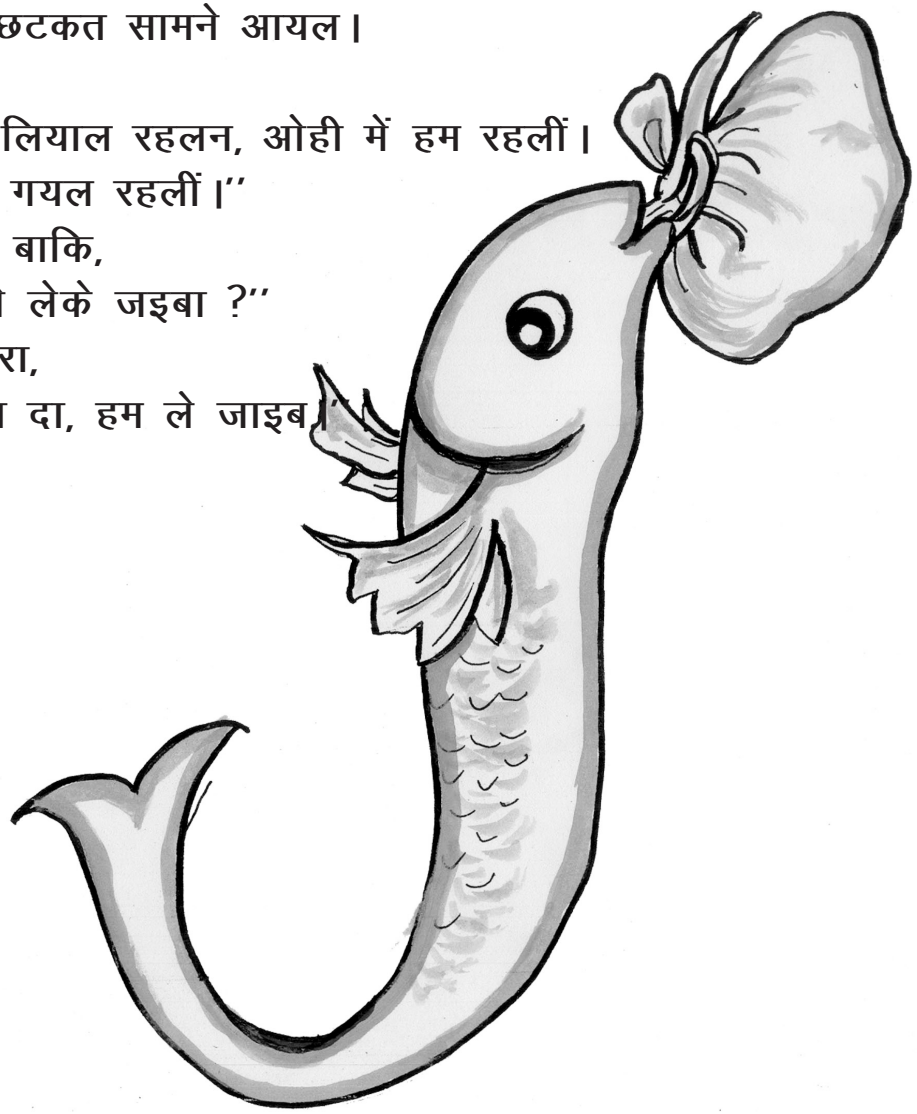

किसान क मेहरारू पोटली के टेंगरा
के कँटवा में फँसा देहनीं।
टेंगरा छटकत–छटकत चल देहलेस।

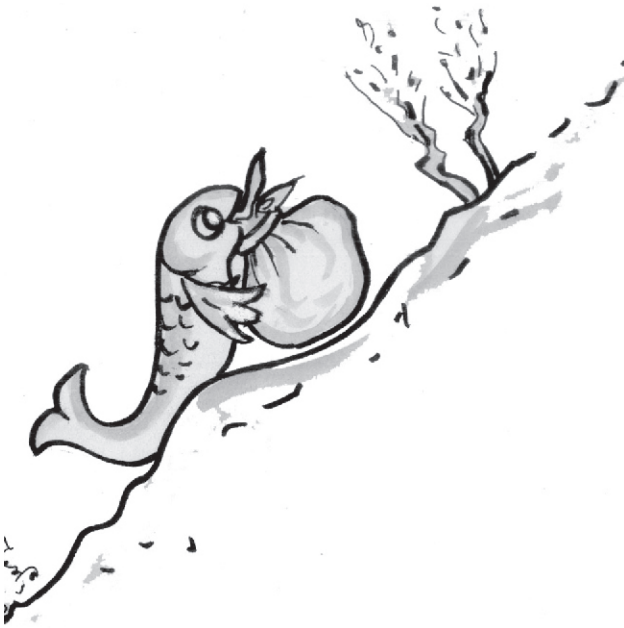

खेत पर पहुँच के डाड़े पर खड़ा होके चिल्लाये लगल–
''बाऊ–बाऊ खाना लियायल हईं, खा ला''
किसान एहर–ओहर देखके सोचलेस कि
हमरे त एक्को लड़का–लड़की ना हऊवन।
कोई दूसरे के बोलावत होई।

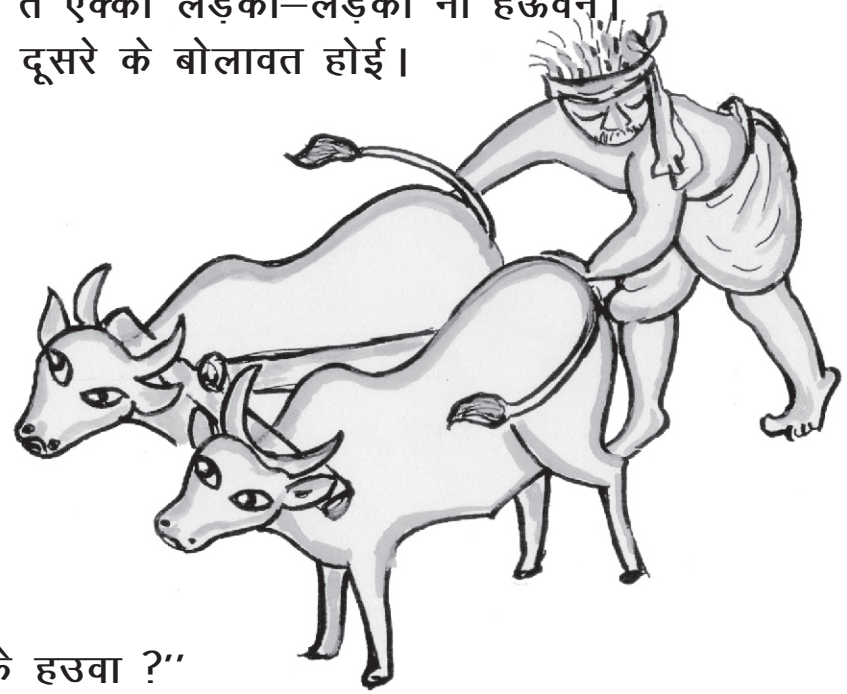

तनि देर बाद टेंगरा फिर चिल्लायल–
''बाऊ–बाऊ खाना लियायल हईं, खा ला''
किसान हल छोड़ के डाड़े पर आयल।
टेंगरा के देख के किसान कहलेस– ''तू के हउवा ?''
टेंगरा कहलेस– ''बाऊ, तू जवन मछरिया लियायल रहला ओही में हम रहलीं।
अब ई ला, तू खाना खा ला। तब ले हलवा हम जोतत हईं।''
किसान कहलेस– ''नाही बचवा, तोहसे न होई ''
टेंगरा कहलेस– ''नाही बाऊ, हम करत हईं न, तू आराम से खा ला''

टेंगरा हल जोते शुरू कर देहलस।
एतने में राजा अपने सिपाही के साथे ओहर से जात रहलन।
खेत में हल–बैल देख के राजा रुक गईलन।

राजा कहलेस– ''एतना सुंदर हल–बैल ईहाँ का करत हौ?
एके त हमरे पास रहे के चाही।''
राजा अपने सिपाही से कहलेस–
''ई हल–बैल लियावा अउर अपने साथे ले चला।''
सिपाही खेते गइलन अउर टेंगरा से हल–बैल छीन लियावलन।
राजा क सिपाही हल–बैल लेके महल चल गइलन।

जब किसान खाना खा के खेत पर आयल त टेंगरा उनसे कुल हाल कहलन।
किसान कहलेस– ''जाय दा, राजा से हमने
लड़ाई भी ना ले सकिला, चल जाये द।''
टेंगरा गुसिया क कहलेस– ''नाही बाऊ,
हम त राजा से हल–बैल वापस लेही आईब।
तू चला घरे। हम राजा से जात हई लड़ाई लेबे।''
किसान कहलेस– ''तू मानत ना हऊआ, त जा''
किसान घरे चल गयल।

टेंगरा सींक जुटा के ओकर गाड़ी बनऊलस।
अउर चल देहलस राजा क महल के तरफ।

जात–जात रास्ते में मूस मिलल।
मूस टेंगरा से पूछलेस– ''टेंगरा भाई, कहाँ जात हउवा ?''
टेंगरा कहलेस– ''सीकियाँ से चीरी–चीरी गड़िया बनऊली प्यारे
राजा ससुर मोरा बैलवा चोरउलन प्यारे
उनसे लड़ईया लेवे जात जी''

मूस कहलेस– ''ई त राजा बहुत गलत काम कईलन।
चला हमहूँ तोहरे संगे चलत हईं।''
मूस आपन कुल कुनबे क साथ ले लेहलस।
टेंगरा मूस के अपने गाड़ी में जोड़ देहलेस। अब सब आगे बढ़े लगलन।

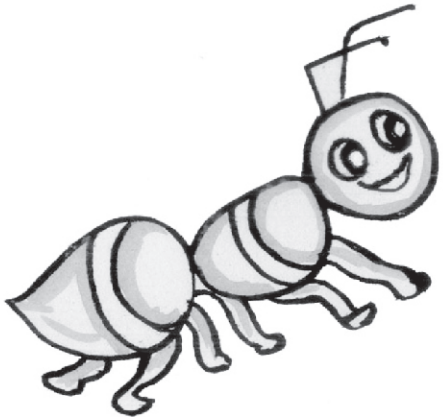

जात–जात ओन्हें रस्ते में चींटी मिललीन।
चींटी पुछलीन– ''का टेंगरा भाई, कहाँ जात हउआ ?''
टेंगरा कहलेस– ''सीकियाँ से चीरी–चीरी गड़िया बनऊली प्यारे
मूस लदनिया लेहले जात जी
राजा ससुर मोरा बैलवा चोरउलन प्यारे
उनसे लड़ईया लेवे जात जी''
चींटी कहलीन– ''राजा ई त बहुत गलत काम कईलन।
आज तोहरे साथे कइलन कल हमनो के साथे करीहन।
राजा के सबक सिखावल जरूरी हौ। चला हमहूँ चलत हईं।''

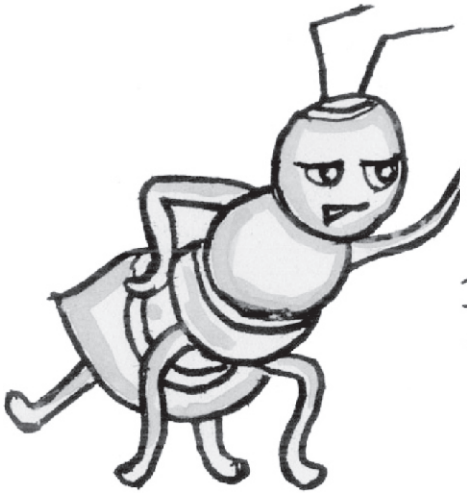

अब चींटी भी आपन कुल कुनबे संगे टेंगरा के साथे चल देहलस।

जाते–जाते बिच्छू मिलल।

बिच्छू भी टेंगरा से पुछलेस– ''अरे टेंगरा भाई, ई टीम लेके कहाँ जात हउआ ?''

टेंगरा कहलेस– ''सीकियाँ से चीरी–चीरी गड़िया बनउली प्यारे
मूस लदनिया लेहले जात जी
राजा ससुर मोरा बैलवा चोरउलन प्यारे
उनसे लड़ईया लेवे जात जी''

बिच्छू कहलेस– ''राजा तोहरे साथे बहुत अन्याय कइलन। हम लोग सब मिल के सबक सिखावल जाई। हमहूँ तोहरे साथे चलत हईं।''

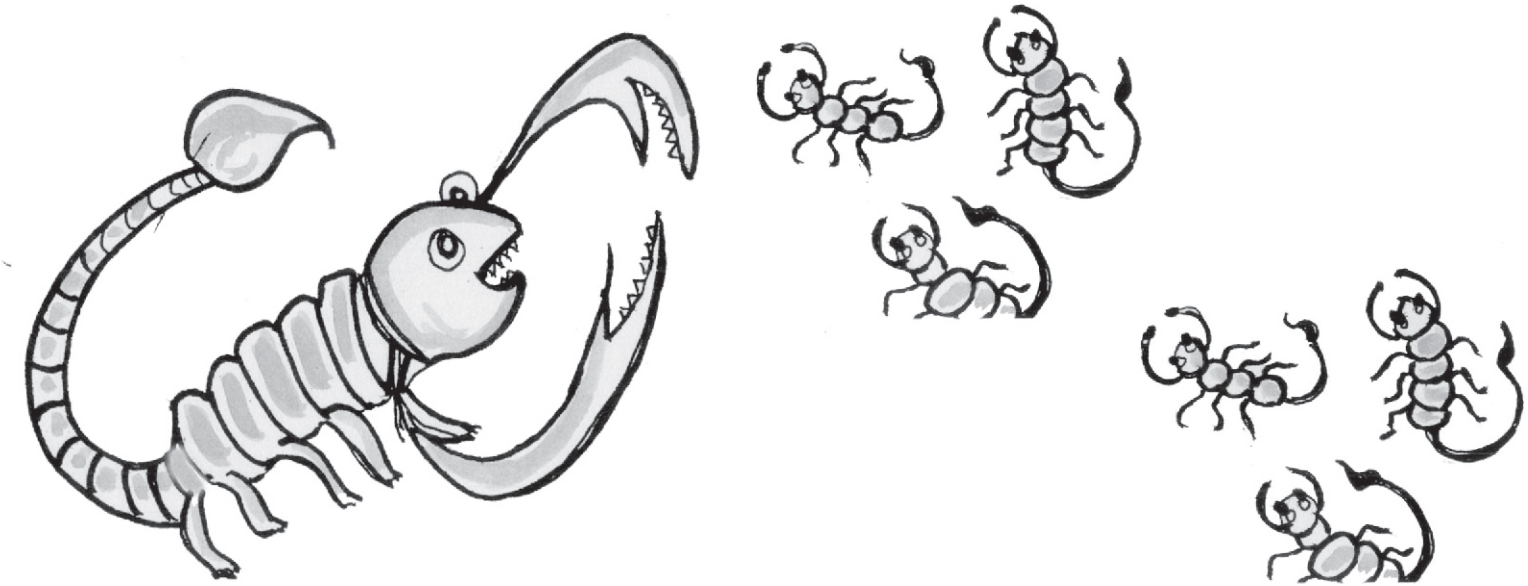

बिच्छू आपन कुल जमात के संगे टेंगरा के साथे चल देहलेस।

फिर जाते–जाते डण्डा मिलल।
डण्डा भी ओही बात पूछलेस– ''अरे टेंगरा भाई, कहाँ जात हउआ ?''
टेंगरा कुल कथा सुनउलेस।
कथा सुन के डण्डा कहलेस– ''हमहूँ तोहरे संगे चलत हईं।''
छोट–बड़ सब डण्डा जुट गयल अउर टेंगरा के साथे गड़िया में लद गइलन।

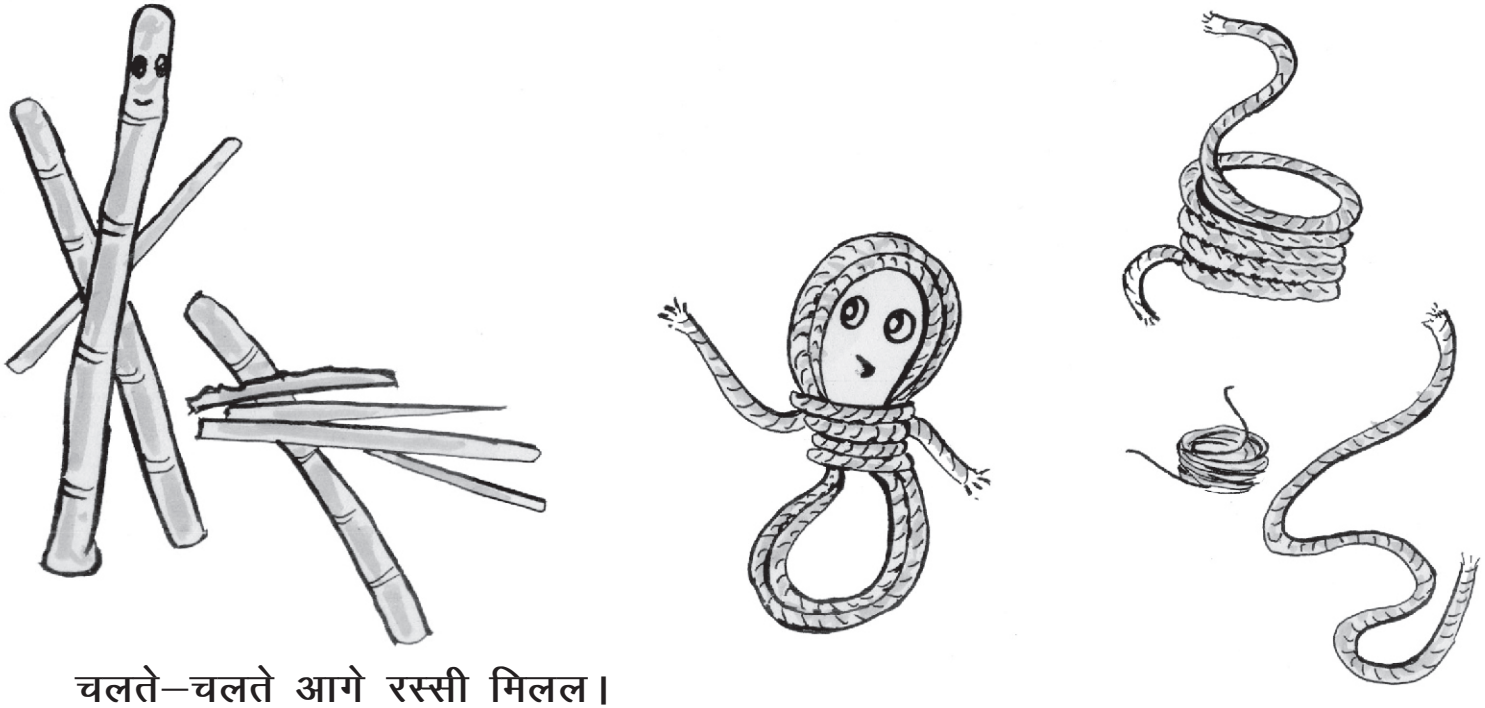

चलते–चलते आगे रस्सी मिलल।
कुल कथा सुन के रस्सी कहलेस– ''टेंगरा भाई, हमहूँ तोहरे संगे चलत हईं।''
हर किसिम क रस्सी गोला गईलीन और टेंगरा के साथे चल देहलीन।

अब पूरी टीम महल के तरफ बढ़े लगल।
महल के दरवाजे पर पहुँच के टेंगरा ललकार के द्वारपाल से खबर भेजवउलेस।
''जाके कह दा कि टेंगरा आयल हौ, ऊ आपन हल–बैल मांगत हौ।
हमार हल–बैल हमके वापस कर दा। नाहि त हम से लड़ाई लेवे के तइयार हो जा।''

द्वारपाल जा के ई खबर राजा के सुनावलेस।
राजा गुस्से में कहलन– ''ऊ छोटा टेंगरा क एतना हिम्मत कि ऊ हमसे लड़ाई लेही ?''
राजा गुस्से में कहलन– ''उन सबके हाथीखाने में बन्द कर दा।''
सिपाही टेंगरा अउर उसके सब साथिन के पकड़ के हाथीखाने में डाल देहलन।

हाथीखाने में टेंगरा बिच्छू से कहलेस– ''बिच्छू भाई, तू आपन चाल दिखावा।''
बिच्छू आपन कुनबे के संग सब हाथी के काट–काट के बेहोस कर देहलन।
सबेरे राजा कहलन– ''जा देखा, ऊ सबन क का हाल हौ।''
सिपाही जा के देखलन, हाथीखाने में सब हाथी बेहोस पड़ल रहलन।

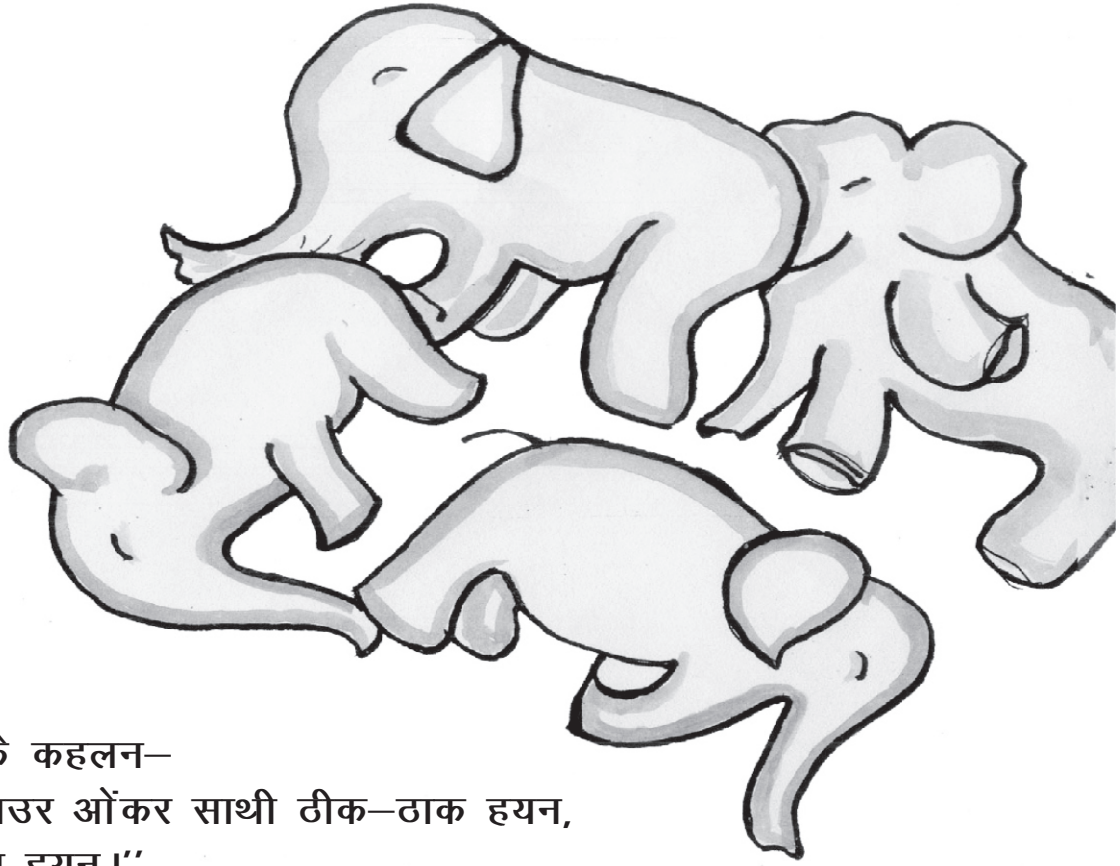

सिपाही राजा से जा के कहलन–
''राजा साहब, टेंगरा अउर ओंकर साथी ठीक–ठाक हयन,
आपन सब हाथी बेहोस हयन।''

अब टेंगरा भी राजा के सनेसा भेजवउलस कि टेंगरा लड़ाई लेवे के तइयार हौ।
राजा अपने सिपाहीयन के टेंगरा से लड़ाई लेवे भेजलन।
इधर टेंगरा मूस से कहलस– ''मूस भाई, तू भी आपन चाल दिखावा।''
मूस आपन साथिन के संगे जमीन के अन्दर घुस–घुस के पोल कर देहलन।

उधर राजा के सिपाही घोड़ा दउड़ावत टेंगरा की तरफ बढ़त आवलन।
पोल जमीन में घोड़ा क पाओं धंस जाये से सब सिपाही एक–पर–एक गिर गइलन।

टेंगरा रस्सी अउर डण्डा से कहलेस– ''तू दूनों आपन चाल दिखावा।''
ओकरे बाद रस्सी सब सिपहियन अउर घोड़न के बाँध देहलन।
अउर डण्डा सबे पर बरसे लगेल।
कुछ सिपाही घायल हो गयलं अउर कुछ मर गयलं।

एक सिपाही भाग के राजा के लग्गे गयल
अउर सब हाल कहलेस।
राजा सब सुन के कहलन– ''अईसन बात हौ,
त तू हमार हाथी निकाला,
अब हम टेंगरा से लड़ाई लेबे चलत हईं।''

तब राजा हाथी पर बइठ के टेंगरा अउर ओनके साथियों की ओर चल देहलन।
टेंगरा चींटी से कहलेस– ''चींटी बहीन, तू आपन चाल दिखावा।''
सब चींटी हाथी की सूँड़ में घुस के काटे सुरू कर देहलीन।
हाथी पगला गयल अउर राजा के पटक के भाग गयल।

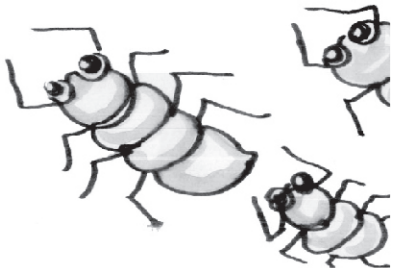

लड़ाई में राजा क हार भयल
अउर राजा टेंगरा से माफी मांगलन।
टेंगरा क हल–बैल लउटा देहलन।

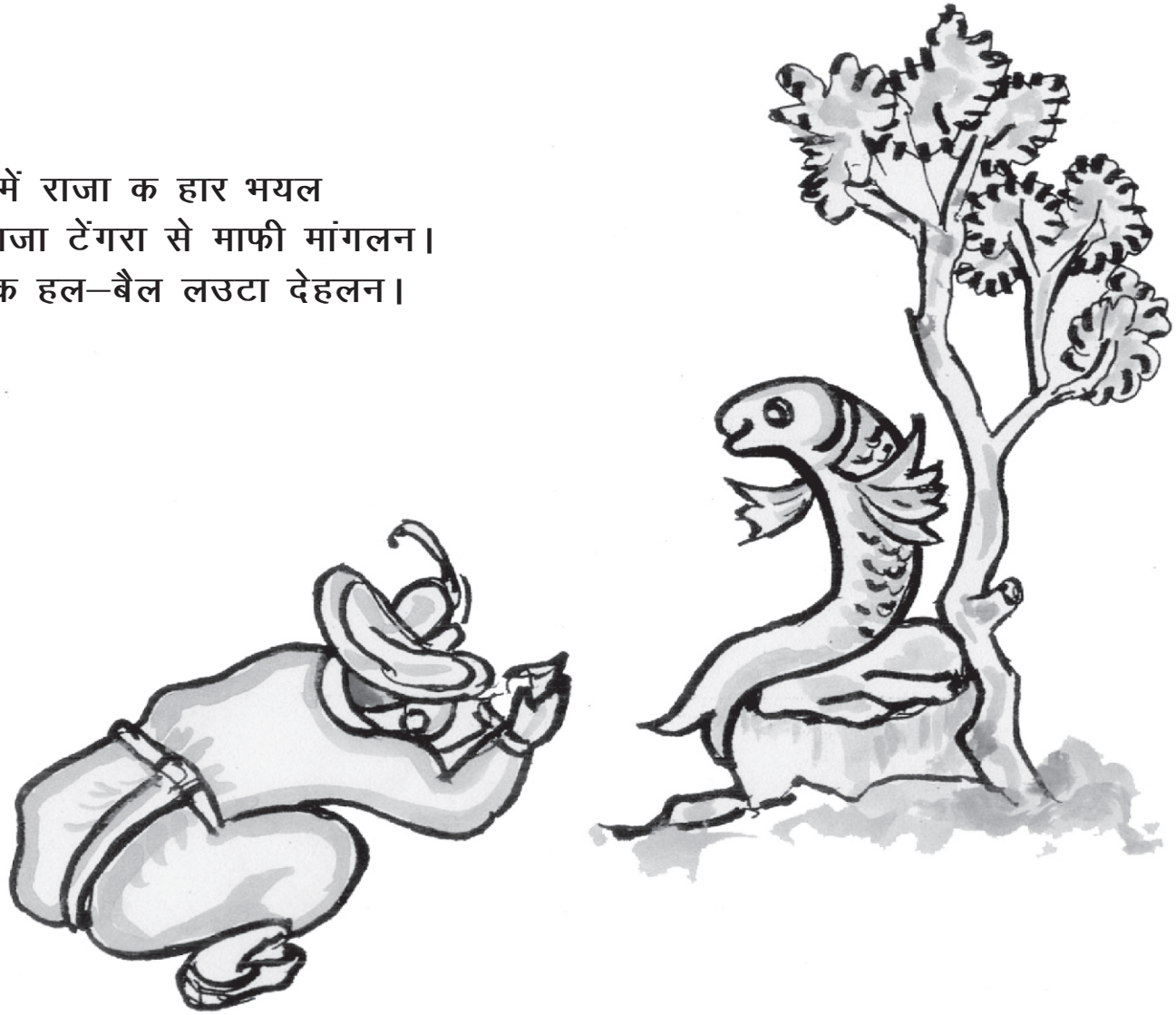

टेंगरा खुसी–खुसी आपन हल–बैल अऊर साथियन संगे घर लउट आयल।
टेंगरा के संगे हल–बैल वापस देख किसान अउर ओकर मेहरारू बहुत खुस भइलन।

सही कहल बा कि, एकता में बड़ी सक्ति हौ। दुनिया में केहू छोट अ कमजोर ना हौ।
सबके पास आपन बिद्या हौ अउर ओही बिद्या में ओनकर सक्ति हौ।

न्याय क लडाइया में सबहन की बिद्या के बीच भाईचारा हो जाई त
केतनन अनयायी राजा के सिंहासन छोड़ के भागे के पड़ जाई।

पुस्तक का संदर्भ और संदेश

ये पूर्वी उत्तर प्रदेश के किसान समाज में प्रचलित कहानी है और वाराणसी के आसपास बोली जाने वाली भोजपुरी में लिखी गयी है। वाराणसी में सारनाथ स्थित विद्या आश्रम की सदस्य सरिता गोंड़ के मुँह से सुनकर यह कहानी लिपिबद्ध की गई है। सरिता का 5 वर्षीय बेटा शुभम् गोंड़ इस कहानी को अभिनय के साथ सुनाता था। बाद में लोकविद्या भाईचारा विद्यालय के छात्र–छात्राओं ने इसे नाटक के रूप में प्रस्तुत किया। अब इसे एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित कर रहे हैं। राजा और प्रजा के बीच कैसा सम्बन्ध होना चाहिये इसका एक विलक्षण चित्रण इस कहानी में है।

समाज में राजा या राजसत्ता की ज़रूरत इसलिये मानी जाती रही है कि लोगों के बीच वाद–विवाद, लड़ाई–झगड़ों का शांतिपूर्ण तरीकों से निपटारा हो सके और लोग आपस में एक–दूसरे के सहयोग और भाईचारे से जी सकें। लेकिन इस युग में राजसत्तायें लोगों को आपस में लड़ाकर और उनका उत्पीड़न कर के अपना शासन कायम रखने की प्रवृत्ति को वरीयता देती हैं। टेंगरा (नन्हीं मछली) का चरित्र इस प्रवृत्ति से मुकाबले के आदर्श का दर्शन कराता है। यह कहानी बच्चों को इस कठिन विषय को समझने का एक सरल रास्ता देती है।

लोकविद्या आन्दोलन की ओर से लोकविद्या भाईचारा विद्यालय चलाये जाते हैं। वाराणसी जिले में 1999 से सारनाथ और आसपास के गाँवों में ये विद्यालय चलाये गये हैं। ये गाँव हैं– दीनापुर, सरायमोहाना, खजुही, हीरामनपुर, ककरहिया, सिंहपुर, नेवादा, घूरीपुर, बरईपुर, नवापुरा, रजनहियां, पंचक्रोशी, टडिया, कपिलधारा, गुलतर, सुलतानपुर, खालिसपुर, भैंसोड़ी, छाही, पतेरवां, रघुनाथपुर, सीयों, फूलपुर, सलारपुर, बभनपुरा, मुस्तफाबाद, पचरांव, नगवां, दामोदरपुर, कोटवां आदि। शहर के काष्ठ खिलौना कारीगरों की बस्ती में भी एक विद्यालय चलाया गया। इसके अलावा जिले के अन्य विद्यालयों में जा कर शिक्षकों व छात्रों के बीच पोस्टर्स और बैठकों के मार्फत 'शिक्षा वार्ता' आयोजित कर लोकविद्या भाईचारे के विचारों को सामने रखा गया। संसाधनों की कमी और अनिश्चितता इन विद्यालयों को निरंतर चलाने में बाधा बनती रही है।

इन विद्यालयों की मूल मान्यता यह है कि जो लोग स्कूल कालेज नही गये, वे भी ज्ञानी होते हैं और वे अपना ज्ञान समाज से प्राप्त करते हैं। उनका यह ज्ञान लोकविद्या है और यह विश्वविद्यालय के ज्ञान से किसी भी अर्थ में कम नही होता। किसान, कारीगर, आदिवासी और छोटी पूँजी का उद्यम करने वाले परिवार लोकविद्या के ज्ञानी होते हैं। इनकी विद्या में ही इनकी शक्ति और एकता का सूत्र है। इन सभी समाजों की बदहाली का कारण यह है कि आधुनिक राजसत्ताओं ने इनके ज्ञान यानि लोकविद्या को ज्ञान का दर्जा नही दिया। लोकविद्या को विश्वविद्यालय की विद्या के बराबर का दर्जा हो तो इन सभी समाजों की सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक बराबरी के रास्ते खुलते हैं।

प्रतिदिन निम्नलिखित सामूहिक बोल के साथ लोकविद्या भाईचारा विद्यालयों की शुरूआत होती है।

• शिक्षा वही जो गैरबराबरी दूर करे। • विद्या वही जो लोकहित साधे। • श्रम वही जो इज्जत की रोटी दे।

टेंगरा का पैंतरा

लोकविद्या को विश्वविद्यालय की विद्या के बराबर का दर्जा मिलेगा
तो समाज से गैरबराबरी के खत्म होने का रास्ता खुलेगा।